स्व–पर प्रकाशक

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

स्व अर्थात–स्वयं, पर अर्थात–दूसरा। इन दोनों को प्रकाशित करना स्व–पर प्रकाशक होता है। दीपक स्व–पर प्रकाशक होता है। प्रकाश ज्ञान है। अंधेरा अज्ञान है। आत्मा और शरीर का बंधन अज्ञान के कारण होता है। आत्मा शुद्ध है किन्तु आत्मा और शरीर के संयोग होने पर दोनों में अशुद्धता आ जाती है और दोनों एक–दूसरे से बंध जाते हैं। बंधन अशुद्धि है। बंधन से मुक्ति मिलना शुद्धि है। बिना ज्ञान के मोक्ष सम्भव नहीं है। आत्मा अनन्त ज्ञान दर्शन, चारित्र और तप से युक्त है। आत्मा सच्चिदानन्द है। वह अजर–अमर और अविनाशी है। आत्मा स्व–पर प्रकाशक है। सूर्य के ऊपर बादल आ जाने से उसका प्रकाश बाहर दिखाई नहीं देता। इसका मतलब यह नहीं है कि सूर्य का प्रकाश नष्ट हो गया। आत्मा के साथ भी यही सिद्धान्त लागू होता है।

आत्मा का ज्ञान कभी नष्ट नहीं होता। चेतना सदैव आत्मा के साथ रहती है। ज्ञानावर्णादि अष्ट कर्मों के प्रभाव के कारण आत्मा का स्वरूप ढ़क जाता है। जैसे ही अज्ञान का बंधन हटा, आत्मा का प्रकाश स्पष्ट हो जाता है। आत्मा का ज्ञान कभी नष्ट नहीं होता। अज्ञान का बादल दूर होने से आत्मा प्रकाशित हो जाता है। जड़ परिणाम है उसमें प्रकाश या ज्ञान नहीं होता। वह पुद्गल है और गलन मिलन धर्मा है। शरीर और आत्मका पृथक तत्व है। शरीर जड़ और आत्मा चेतन है।

जो जीव अपने समान अन्य जीवों को देखता है उसकी दृष्टि आत्मोपम्य दृष्टि होती है। आत्मोपम्य का अर्थ है– अपने समान सभी को मानना। सभी में चेतना का दर्शन करना। चेतना किसे कहते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में कहा जा सकता है कि चेतना को आत्मा या जीव कहते हैं। असंख्य चेतनामय परमाणुओं के पिण्ड को आत्मा कहा जाता है। आत्मा सुख–दुःख की अनुभूति करता है। जीव आत्म सदृश जीव का प्रजनन करता है। जड़ पदार्थ में प्रजनन की शक्ति नहीं होती। आत्मा अनन्त ज्ञान, दर्शन, चारित्र और सुख का खजाना है। पंचइन्द्रियों के विषय बाह्य जगत से आंतरिक जगत में आते हैं। उनका संवेदन आत्मा करता है। इन्द्रिय

सुख के साथ दुःख जुड़ा रहता है। आत्मा में सुख ही सुख है। आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप, अजर, अमर और अविनाशी तत्त्व है। आत्मा को छोड़कर अन्य पुद्गल तत्त्व अविनाशी है। आत्मा में रूप, वर्ण, रंग और गन्ध नहीं है। आत्मा में अव्याबाध सुख है। जन्म–मरण की परम्परा से आत्मा मुक्त है। आत्मा सुख का भण्डार है। आत्मा आनन्दमय है। संसार की सभी वस्तुएं नाशवान है। शरीर भी आत्मा के साथ नहीं जाता। चेतना जब एक शरीर से दूसरे शरीर में जाती है तो कार्मण शरीर ही उसका सहायक होता है। कार्मण शरीर में कर्म रज चिपके रहते हैं। जो जैसा कर्म किये रहता हैं उसे दूसरे भव में वैसा ही रूप, रंग और शरीर मिलता है। चौरासी लाख जीव यौनियों में सभी प्राणी कर्म के कारण ही पुनर्जन्म को प्राप्त करते हैं। मानव के समान ही सभी प्राणियों में आत्मा है। आत्मा के स्तर पर कोई भेद नहीं है। मानव जीवन पाकर चेतना का विकास करना चाहिए। आनन्दमय चेतना की अनुभूति मानव को करनी चाहिए।

अध्यात्म का अर्थ है आत्मा में रहना। जीव और जगत् के भेद को जानना और मानना। संसार को ही सबकुछ मानकर न रहना। पारलौकिकता के बारे में चिंतन करना। इस संसार में मानव लौकिक और पारलौकिक जगत के विषय में चिंतन करता है। लौकिक से तात्पर्य इस लोक से है जिसमें हम रहते है। सभी प्राणी इस लोक में ही अपनी जीवन लीला करते है।

एक इन्द्रिय से लेक पंचेन्द्रिय प्राणी तक सभी जीव है। चेतना का स्तर सब में भिन्न–भिन्न है। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो लौकिक और पारलौकिक जगत के विषय में सोचता है। धर्म कर्म करता है। अन्य प्राणी केवल इन्द्रिय के वशीभूत होकर के ही कार्य करते है। मानव ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें बुद्धितत्व है और वह विवेक से कार्य करता है। बुद्धि ही मानव को अन्य प्राणियों से भिन्न करती है। आत्मा तो सब में है। सभी आत्माएं समान है। मानव ही आत्मचिंतन करता है। वेदों से लेकर के अधुनातन साहित्य तक के सभी ग्रंथ आत्मा, परमात्मा, जीव, जगत के बारे में चिंतन करते है।

आत्मा का विवेचन दर्शन शास्त्र का प्रमुख विषय रहा है। जितने भी दर्शन है सभी ने आत्मा के बारे में चिंतन किया है और सत्य का साक्षात्कार करने का प्रयास किया है। आत्मा के स्वरूप

के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। योगी लोग आत्मा के स्वरूप का साक्षात्कार करते है। भोगी लोग इस संसार को ही सबकुछ मानकर उसी में भ्रमण करते है। आत्मा सच्चिदानंद स्वरूप है। इसकी प्राप्ति के बाद किसी भी वस्तु को प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रहती। सब प्रकार के दोषों से रहित होने पर सम्यक् ज्ञान, ब्रह्मचर्य और सत्य के द्वारा आत्मसाक्षात्कार किया जा सकता है। चेतन ही विषयों का ज्ञाता तथा द्रष्टा होता है। इसे अचेतन नहीं प्राप्त कर सकता। आत्मा ही वह द्रव्य है जिसमें बुद्धि, सुख–दुःख, राग–द्वेष, इच्छा प्रयत्न आदि गुण रहते हैं। ये गुण शरीर के नहीं आत्मा के ही हो सकते हैं। आत्मा देह, इन्द्रिय आदि से भिन्न है, नित्य और व्यापक है।